इस पुस्तक में प्रेस वालों नें कइ अशुद्धियां करदीं हैं उन को सुधारनें की कृपा करें ॥

हरि भजन

प्रेम संदेशा भेज दो, कृष्ण मिलेंगे आय।
हरि उसकेही जात हैं, जो हरि का हो जाय॥

प्रकाशक :—
बलदेवदास लोहिया अग्रवाल
१७५, हरीसन रोड,
कलकत्ता।

केवल
कृष्ण भक्तों के लिये

वक्तव्य

माननीय परम पूज्य गुरुदेव महामहोपाध्याय श्री १०८ शिव कुमारजी शास्त्री तथा महामहोपाध्याय श्री १०८ प्रभुदत्तजी अग्नि होत्री काशी-निवासीकी असीम कृपा-उपदेशसे मुझको वेदान्त विषयका कुछ उत्सव प्राप्त हुआ, जिससे यही सिद्धांत पाया गया कि द्वैत और अद्वैतका विषय गहन होनेके कारण अनेक वादानुवाद होनेपर भी निश्चित नहीं है।

मेरी समझके अनुसार ये दोनों एक ही हैं, अर्थात् द्वैत वादियोंका कथन है कि माया और ब्रह्म दो हैं और अद्वैत वादियोंका कथन है कि माया और ब्रह्म दो नहीं हैं, केवल कर्म विशेष है (जैसे यदि जीव न हो, तो पराक्रम क्या कर सकता है और यदि पराक्रम न हो तो जीव क्या कर सकता है) मायाके तीन भेद

माने गये हैं। जैसे शक्ति पराक्रमको कहते हैं, माया-बुद्धि बलको कहते हैं, और प्रकृति स्वभावको कहते हैं। स्थानाभावके कारण इस विषयको विस्तारपूर्वक नहीं लिखा जा सका।

जब ईश्वरमें शक्ति उत्पन्न हुई, तब एकोहम् बहुस्याम पदके अनुसार तेज उत्पन्न हुआ, जिसको हिरण्य-गर्भ और अहङ्कार इत्यादि कहा जाता है। उस महान तेजसे ऋत और सत्य उत्पन्न हुए (सत्य से परम आत्मा और ऋत से तीनों गुण (अर्थात् सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण) और इन दोनोंके समागमसे अच्छादित ये कर्म संयुक्त जीव रूपमें हो गये। तत्पश्चात् पञ्च-भूत आदि संसार उत्पन्न हुआ।

जीव कर्मबद्ध होनेके कारण पुनर्जन्म तथा अपने कर्मानुसार बारम्बार जन्म मरण और सुख दुःख भोगते हैं। कर्मोंसे निवृत्त होना ही मोक्ष-पदकी प्राप्ति

है। लेकिन यह जीवात्मा एक क्षण भी बिना कर्म किये नहीं रहता। मनसा, वाचा, कर्मणादिसे कर्म करता ही रहता है।

मोक्ष-पदकी इच्छा रखनेवाले सज्जनोंको श्री गीताजीमें कहे हुए श्रीकृष्ण भगवानके वचनानुसार राजसी, तामसी कर्मोंका त्याग कर देना ही चाहिये, क्योंकि यह पुनर्जन्मका बन्धन है और सतोगुणके कर्म ऐसे करने चाहिये कि जिनके फल पुनर्जन्मको बाध्य न कर सकें, इसलिये मैं श्रीकृष्ण भगवानके अवतारिक लीलाको योग्य समझता हूं, क्योंकि श्री-कृष्णावतार पूर्ण कलासे माना गया है और इस अवतार को लगभग पांच हजार वर्ष ही हुए हैं और भगवानके लीला कीर्तनका फल पुनर्जन्मको बाध्य न करके कर्मों की निवृति करता है।

इसलिए मैं अनेक राग-रागनियोंमें भगवानके

कुछ गुणानुवाद पुस्तक रूपमें छपवा कर भगवद्-प्रेमी जनोंके अर्पण करता हूं। आशा है इससे कुछ लाभ उठावेंगे।

बल्देवदास लोहिया, अग्रवाल।

श्रीगणेशाय नमः

* हरि भजन *

कसूरी

म्हाने बुध दीजो महाराज, गजानन्द गौरीके नंदा । टेक

सूंड सुंडाला दुन्द दुन्दाला मोटा हाथ कंधा ।
माथे ऊपर तिलक विराजै सजे भाल विंदा ॥
गजानन सजे भाल विंदा । म्हाने०

पिता तुम्हारा है शिव शंकर मस्तकपर चंदा ।
माता तुम्हारी है पारबती ध्यावै सब वंदा ॥
गजानन ध्यावै सब वंदा । म्हाने०

विघ्न निवारण मंगल कारन विद्या वर दंदा ।
गले वैजन्ती माल विराजै चढ़ै पुष्प गंधा ॥
गजानन चढ़ै पुष्प गंधा । म्हाने०

जो नर तुमको नहीं मनावै उनका भाग मंदा ।
जो नर तुमरी करै ध्यावना चलै रोजक धंधा ॥
गजानन चलै रोजक धंधा । म्हाने०

गजल

मैंने लीनी है शरण गणराज की ॥ टेक ॥

बुद्धिको प्रकाश होत, विघनोंको नाश होत।

सब सिद्धी होत है काजकी ॥ मैंने०

राजत है एकदन्त, दया करो दयावन्त।

कैसी शोभा बनी है आजकी ॥ मैंने०

राखो जी सभामें लाज, तेरी हौं शरण आज।

धुन लागी रहै सब साजकी ॥ मैंने०

बलदेव है शरण आज, गौरीसुत महाराज।

रहे कृपा नित गजराजकी ॥ मैंने०

खेमटा भैरवी

मन भावै हमें काशीकी गली,

विश्वनाथ पद पूजा भली।

श्वास श्वास पर शिव दर्शन,

जहां सिद्धि विराजैं थली थली।

भैरव काल करत कोतवाली,
पाप ताप कर डालैं मली मली ।
शोभा सदन मदन छवि वारी,
जहां वसैं हिमवान लली ।
बलदेव के आनन्द धन्य जीवन,
जंह यम की कछु नांहिं चली ।

भैरवी

बसुरियां ऐसी बजाई श्याम । टेक
नवल त्रिबंक कदम तरु ठाढ़े मोहत ब्रृजकी बाम ।
ये छबि देखि बलदेव मोहनकी रहि ना सके निजधाम ।

कहरवा

सुहावे सखी मोहनकी मोय वैन । टेक
यमुना तटपर बन कुञ्जनमें, श्याम चरावत धेन । सु०
कैसे पाऊं हरिके दर्शन, सुफल करूं निज नैन । सु०
आयो बलदेव शरण प्रभु तोरे, संतनके सुख दैन । सु०

थियेटर

गाइये बजाइये रिझाइये सब मिलके
सब मिलके गोविंद गुन गाइये । टेक
सुन्दर काला भज नन्दलाला,
हरि ध्यावे सो पावे, सब मिलके । सब०
कहै बलदेव दरस गोपाला,
बड़े भाग्यसे पावे, सब मिलके । सब०

सोरठ

हम न भये बृजको रेनु । टेक
जिन चरनन डोलत नन्दलाल ,
नित प्रति बजावत बेनु ।
हमतें धन्य परम ये द्रुमलता ,
बालक बच्छ अरु धेनु ।
बलदेव सखा खेलत हंसि बोलत ,
गोकुल श्याम चरावत धेनु ।

खेमटा

रे निरमोही छबि दरसाय जा।

कान चातकी स्याम बिरह धन,

मुरली मधुर सुनाय जा।

नन्दकिशोर नैन चकोरन,

द्युति मुख चन्द दिखाय जा

भयो चहत यह प्राण बटोही.

रूसे पथिक मनाय जा

बनवारीके ऊपर वारी जाऊं,

बल्देवसे प्रीति लगाय जा।

विहाग

करो रे मन, नन्द नन्दनको ध्यान।

यहि अवसर तोहि फिर न मिलैगो,मेरौ कह्यौ अब मान।

घूंघरवारी अलकैं मुखपै, कुण्डल झलकत कान।

बलदेव इनके अलसाने नैना, झूमत रूप निधान॥

हीरा

वृजकी लता लगे प्यारी, लता लगे प्यारी
जामें बोले दादुर मोर । टेक

एक तो यमुनाजीको न्हायवो
दूजे दर्शन नन्दकिशोर ।

एक तो कदमकी छैइयां
दूजे ठाढ़े हैं नन्दकिशोर ।

एक तो बलदेव गुन गावे
दूजे मन भावे नन्दकिशोर ।

बिलावल

भजु मन नंदनंदन गिरधारी ॥

सुख-सागर करुणाको आगर, भक्त बछल बनवारी ।
मीरा करमा कुबरो सबरी, तारी गौतम नारी ॥
बेद पुराननमें जस गायो, ध्यावत हैं वृज सारी ।
बलदेवके स्याम चतुरभुज, लेजा खबर हमारी ॥

दादरा

तेरो मुख चन्दा चकोर मेरे नैना । टेक

पलहुं न लागे पलक बिन देखे ।

भूल गये मन पलहुं लगे ना ॥

हरबरात मिलवेको निस दिन ।

ऐसे मिले मानो कबहुं मिले ना ॥

बलदेवके प्रभु रसकी ये बतियां ।

रसिक बिना कोई समझ सके ना ॥

कल्याण

नाथ मोहिं कीजै बृजकी मोर ।

निशदिन तेरो नृत्य करौंगी बृज की खोरन खोर ।

श्याम घटा सम घात निरखि के कूकोंगी चहुं ओर ॥

मोर मुकुट माथेके काजें दैहों पंखा मोर ।

ब्रजवासिन संग रहस करूंगी नचिहौं पंख मरोर ।

प्रभूके बलदेव सरणागत जय जय युगलकिशोर ॥

ठुमरी

करके रसको बतियाँ सजनी,
मोय कुञ्जन श्याम बुलाय गयो री। टेर
मैं सूती थी अपने भवनमें,
रसके नैना भटकाय गयो री ॥
करके बतियाँ छूकर अंखियाँ,
नाहक जिया तरसाय गयो री ॥
दास बलदेव कहत कर जोरी,
हरिके चरण चित लाग गयो री ॥

पीलु कहरवा

लगन हमारी लागी, दरसन देना हो घनश्याम ॥
श्याम सनेही जीवन ये ही, औरन से क्या काम ।
नैन निहारूं पल न विसारू, सुमिरूं निसदिन श्याम ॥
हरि सुमिरनते सब दुख जावे, मन पावे विसराम ।
तन मन धन न्योछावर कीजे, वलदेव वसै वृजधाम ॥

झंझोटी

श्याम दृगनकी चोट बुरी री

ज्यों ज्यों नाम लेति तू वाकौ,

मो घायलपै नोन पुरी री ॥

ना जानौं अब सुध-बुध मेरी,

कौन बिपिनमें जाय दुरी री ॥

कहे बलदेव नहिं छूटत सजनी,

जाकी जासों प्रीति लगी री ॥

बिलावल

देख सखी नव छैल छबीलौ,

प्रात समय इततें को आवै ।

कमल समान बड़े दृग जाके,

स्याम सलौनो मृदु मुसुकावै ।

जाकी सुन्दरता जग बरनत,

मुख-सोभा लखि चंद लजावै ।

बलदेव यह स्याम वही हैं,
जो यसुमतिकौ कुंवर कहावै ॥

भैरवी

एरी सखी बन्शी बनमें बजी। टेक
श्रवण सुनत सब वृजको बनिता, आतुर तुरत भजी।
धीर समीर तीर यमुनाके, सुन्दर श्याम सजी।
दास बलदेव श्याम मिलवेकूं, कुलकी लाज तजी।

भीमपलासी

अरी ऐरी सखी धुनि गूंजि उठी
लई श्यामने हाथमें बांसुरिया।
मेरे कानमें कान्हकी तान पड़ी
तभी भागी मैं छोड़के बाखरिया ॥
उन मोसों कहे कहां जाय सखी
सुन बैन भई मैं बावरिया।
बलदेव चलो यमुना तट पै
बजवावें सलोने पै बांसुरिया ॥

खेमटा

अजी, बन्शी वाले से नेहा लगाना।

नन्दका कुमार तार दे। बन्शी०

दे भक्ति और मुक्ति करोजी, कृपा भगवाना।

जगमें हमारा कौन है। बन्शी०

गोपी सगरी तुमने तारी अब मेरी भी वार निभाना।

भवसे मुझे उबारदे। बन्शी०

है वारी बनवारी सुनो सुनो भूल नहीं जाना।

बलदेव के स्वामी आप हैं। बन्शी०

काफी

वेदरदी, तोहि दरद न आवै!

चितवनमें चित वस करि मेरौ,अब काहेको आंख चुरावै।

कबसों परी द्वार पै तेरे, बिन देखे जियरा घबरावै।

बलदेव ये महबूब सांवरो, घायल करि फिर गैल बतावै।

पुरीया

लागो कृष्ण चरण मन मेरौ ।

ध्रुव प्रहलाद दास कर लीन्हें ऐसेहि मोपर हेरौ ।

गजकी टेर सुनत ही तुमने तुरतहि जाय उबेरौ ॥

भवसागरसे पार उतारहु नेक करौ नहिं देरौ ।

बलदेव दासको दीजे प्रभु पद-प्रेम घनेरौ ॥

बरुवा

रस भरी रे मोहन तेरी अखियां । टेक

डगर चलत पग धरत हरत मन,

करत रार नहिं माने लङ्गर ।

कर रही पुकार सब सखियां ॥ १ रस०

चुनरी झटक मोरी गगरी पटक दीनी,

मटक चाल गयो नन्दको लाल ।

अलि अलक भाल पर रखियां ॥ २ रस०

बलदेव तट यमुना बिहारी इटतना,

कर कर चित चञ्चल लंगर।

चढ़ गये कदम की डारियां॥ ३ रस०

काफी

या सांवरेसों मैं प्रीति लगाई

कुल कलंकतें नाहिं डरौंगी,

अब तो करौं अपनी मनभाई

बीच बजार पुकार कहौं मैं,

चाहै करौ तुम कोटि बुराई।

लाज मर्जाद मिली औरन कों,

मृदु मुसकानि मेरे बट आई।

बिनु देखे मनमोहनको मुख,

मोहि लगत त्रिभुवन दुखदाई।

बलदेव को सब लागत फीको,

जिन चाखी यह रूप-मिठाई॥

नाटक

बन्शीवारे हमारी गली आजा रे ॥ टेर

दिन नहिं चैन रात नहिं निद्रा,सपनामें दरस दिखाजारे

तुम्हारी बंसुरी हमारो कंगना, नैनोंसे नैन मिलाजारे ।

मोर मुकुट कानन बिच कुण्डल,अंगनामें बंशी बजाजारे

बलदेवके प्रभू नटवर नागर, अपनों दरश दिखाजा रे ।

पुरबी

मोहे मधुवन में दरस दिखाया करो । टेक

मोहन प्यारे यमुना तटपै,वन्शी की तान सुनाया करो।

जो भोजन होय भवनमें मेरे;हितसे भोग लगाया करो ।

वृन्दावनकी कुञ्जगलिनमें, मधुर रागनी गाया करो ।

कहत बलदेव सुनो बनवारी,सदाहीं दिलमें समाया करो ।

भुपाली

मोहें मधुबन श्याम बुलाय गयो री ।

मैं सोई थी अपने भवनमें,सोतीको आन जगाय गयोरी

वृन्दावनकी कुंज गलिनमें,मुरलीकी टेर सुनाय गयोरी

ऐसे चोर चतुरसे हारी, चोर झपट मेरो ले गयो री।
नजर बचाके आई श्यामसे, हेरनकूं बलदेव गयो री।

मालकोस

साँझ समय गैयाँ ले आवें। टेक
आगे आगे गैयाँ पीछे पीछे बछियाँ,
जा पीछे नंदलाल चलि आवें
घूंघर वाली अलक मुखनपै,
उड उड रज उनपे जम जावें।
सारो दिन मोहिं तलफत बीते.
साँझ को ये मेरा ताप मिटावें।
बलदेवके प्रभु श्यामबिहारी,
उन चरणों से हेत लगावें।

जंगला

आज सखीवृन्दावनमें हरि,रस भरी बैन बजावत हैरी।
सात स्वरन संग ताल मिलाकर,राग रागनी गावत हैरी।

लम्बी धुनि सुनाय गोपियनको,जमुना तीर बुलावत हैरी
चाँद चाँदनी रात मनोहर,मिलकर रास रचावत हैरी।
बलदेव या दरसके कारण,सुर बिमान चढ़ि आवत हैरी।

भैरवी

मेरी आली री श्यामसुन्दर दिखला दे। टेक
बिन दर्शन मोहे चैन न आवे री, चंद्रवदन निरखा दे।
सांवरी सूरत मोहनी मूरत री, मुझको आज मिला दे।
यमुना तट बन्शी बजावे री, माधुरी टेर सुना दे।
बलदेव ये चरन बलिहारी री, नैन सफल करवा दे।

जङ्गला

आज खेलन मत जा मेरी सजनी,
श्याम सुन्दर घर आवत है री। टेक
मोर मुकुट सिर ऊपर राजे,
गल बनमाल सुहावत है री॥
बन्शी अधर लगाय बजावे,

मधुर मधुर धुन गावत है री ॥
पीत वसन मकराकृत कुण्डल,
पग नूपुर झणकावत है री ॥
बलदेव ये प्रेम बस मोहन,
सखियन दरस दिखावत है री ॥

पहाड़ी

री गुजरिया पनियां भरन मत जा । टेक
आना जाना रोकत कान्हा पनघट निकट खड़ा ॥
नटवर नागर पटकत गागर झट पट पट झटका ॥
बन्शी बजावे सुध बिसरावे मधुर मधुर धुन सुना ॥
चरन कमल को ध्यान लगावे बलदेव हृदे सदा ॥

सारंग

बन्सीवारा सांवरिया आ ज्या रे । टेर
। बिन देखे नहिं चैन पड़त है. चाँद सा मुखड़ा दिखाज्यारे
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, मुरलीको टेर सुनाज्या रे ।

दधी माखन घरमें बहु मेरे, दिल चाहे सोई खाज्या रे ।
बलदेवके प्रभु तुमरे मिलन कूं,तेरी सूरत दिखाज्या रे ।

बैराठी

सुन बन्शी की टेर बिलम रही । टेर
पनियाँके मिस आवत सबेरी, गौवें आवन घनि बेर ।
गज की सी चाल चलें मृगनैंनीं,चपल नयन चारों हेर ।
सासुल बूझे सुन री बहुरिया, कहां लगाई एती देर ।
बलदेव बिहारी रहैं खिड़कमें, याँ से मैं आई अबेर ।

खम्माच

स्याम तू मोहिं प्रानते प्यारौ ।
जो तोहि देखि हियौ सुख पावत सो बड़ भागन वारौ
तू जीवन धन सरवस तू ही, तूही हगन को तारौ ।
जो तोकों पल भर न निहारूं दीखत जग अंधियारौ ।
मोद बढ़ावनके कारन हम, मानिनि रूपहिं धारौ ।
बलदेव हम दोऊ एक हैं, फुल सुगंध न न्यारौ ॥

बिलावल

शोभित कर नवनीत लिये । टेक

घुटुरुन चलत रेनु तनु मंडित, मुख दधि लेप किये ।
चारु कपोल लोल लोचन, गोरोचन तिलक किये ।
कठुला कण्ठ बज्र केहरि नख, राखत रुचिर हिये ।
धन्य नन्द यशोदा या सुख बरसत, बलदेव लेत पिये ।

सोरठा

स्याम सुन्दर जांकी दृष्टि परत,
तांकी गति होत है और और ।
न सुहात भवन, तन असन बसन,
वन हीकों जाव दौर दौर ॥
नहिं धरत धीर, हिय बरत पीर,
ब्याकुल है भटकत ठौर ठौर ।
प्रेम अंसुवन भरे नैन बलदेवके,
झांकत डोलत पौर पौर ॥

दुर्गा

सांवलिया की चेरी कहौ री ॥ टेक ॥

तुम चाहे मारौ चाहे राखो,जनम-जनम नाहिं तजौंरी ।
कर गहि लियौ कहत हौं सांची नहिं माने तो तेरी सौरी ।
जो त्रिभुवन ऐश्वर्य लुभावै,तिनका लौहौं सो समुझौंरी ।
बल्देव कहत सुन मेरी सजनी प्रगट भई अब नाहिंन चोरी

ललित

देखो री छवि नन्द सुवन की । टेक

मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल,
मुक्त माल गल मनु किरननकी । दे०
कर कंकन कंचनके शोभित,
उर भृगुलता नाथ त्रिभुवन की। दे०
तन पहिरे केसरिया बागो,
अजब लपेटन पीत बसन को । दे०
सुनि बलदेव नुपुरन धुनि गाजे
निरखत हों छवि श्याम चरन की । दे०

जैजैवन्ती

आज यशोदा पै चलो सब गौरी ॥ टेर

नंद नन्दन मेरे मन्दिरमें, करे माखनकी चोरी ।
ऐसो सुत तूने जायो यशोदा, अब बन बैठी है भोरी ॥
बृन्दावन की कुंज गलिनमें, बहियां पकड़ झकझोरी ।
बलदेवके प्रभु वरजोरीकर, सिरकी मटकिया फोरी ॥

जैजैवन्ती

मिला दे सखी, श्याम सुन्दर मोय, आज । टेक

रात दिवस मोय चैन न आवत, श्याम मिलनके काज
खान पान मोहे कछु नहिं भावत, बिन देखे बृजराज ।
जोगन बनकर बन बन डोलूं, छोड़ जगत की लाज ।
बलदेव बिना हरि सुमिरण, बृथा साज समाज ॥

बिहाग

बस गये नैनन मांहि बिहारी । टेक

देखी जबसे श्यामलि मूरति, टरत न छबि दृग टारी ।

मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल बामअंग श्रीराधा प्यारी।
प्रेम भक्ति दीजे मुहि स्वामी लीजै अपनी ओर निहारी।
यह ध्यान बलदेव करत हैं, दरसन देना हो बनवारी॥

खेमटा

जरा कह दो सांवरियासे आया करे,
आया करे नहिं जाया करे। टेक

दिन नहिं चैन रैन नहिं निद्रा,
सपनेमें दरस दिखाया करे।

मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल,
सांवलि सूरत दिखाया करे।

यमुना तटपर धेनु चरावे,
बंशीकी लहक सुनाया करे।

बलदेव के प्रभु श्याम बिहारी
मेरे दिलसे नहिं जाया करे।

अंगलापीलू

बांके बिहारी से लागी लगन,

मेरे अंगनामें बन्शी बजाय गयो रे। बां०

मोर मुकुट पीताम्बर सोहे,

मोहें बांकी अदाको दिखाय गयोरे। बा०

सोवत थी हम अपने भवनमें,

मोहें बन्शी बजायके जगाय गयोरे। बां०

जब धाई मैं प्यार करनको

मोहे हंसके अंगुठा दिखाय गयो रे। बां०

कहा छवि बरनो श्याम सुन्दरकी

बलदेवके हिरदे समाय गयो रे। बां०

भैरवी

कुमार मेरे प्यारे ठारो है नन्दको कुमार। टेक

बन्शी बजावे मनको रिझावे, नैनोंकी मारे कटार।

कटार मेरे प्यारे०।

नीर भरनको चली गुजरियां, सिरसे ली गागर उतार ।

उतार मेरे प्यारे० ।

नन्दको लाला है मतवाला, बृज बनकी लूटे बहार ।

बहार मेरे प्यारे० ।

बलदेवके प्रभु कुंजविहारी, घूंघटको देखें उघार ।

उघार मेरे प्यारे० ।

भीम पलासी

धूरि भरे अति शोभित श्यामजू ,

कैसी बनी सिर सुन्दर चोटी

खेलत-खात फिरे अंगनामें ,

पगपैंजनी बाजतीं पीरो कछोटी ।

वाछबिको बलदेव बिलोकत ,

वारत काम कलानिधि कोटी ।

कागके भाग कहा कहिये ,

हरि-हाथसों लै गयो माखन रोटी ॥

काफी चाचर

फाग खेलन कैसे जाऊं सखीरी,
हरि हाथन पिचकारी है।
सबकीं चुनरिया कुसुम रंग बोरी,
मेरी चुनरिया गुलनारी हैं।
कोई सखी गावति कोई बजावति,
श्यामकी सुरत मतवारी है।
बलदेवके प्रभु गिरधर नागर
हमको तो शरण तिहारी है।

पीलू

मेरे नैनामें श्याम रस छाय रह्यो री। टेर
जल बिच कमल कमल बिच कलियां,
कलियोंमें भंवरा छिपाय रह्यो री।
जल बिच सीप सीप बिच मोती,
मालामें मोती समाय रह्यो री।

बन बिच बाग बाग बिच बंगला,

बंगलामें बन्शी बजाय रह्यो री।

कहत बलदेव मोहन बिनु देखो,

मेरो जिया अलसाय रह्यो री।

कालींगड़ा

मोहन बस गये मेरे मनमें। टेक

देखें तितही एही दीखो, घर बाहर आंगनमें।

अंग अंग प्रति रोम रोममें, छाय रहे सब तनमें।

कंकन कलित ललित मणि माला नुपुर धुनि चरननमें।

चपल नयन भ्रकुटी वर बांकी, ठाढ़ी सघनलतनमें।

बल्देव बिनु मोल बिको हूं इनकी नेक हंसनमें।

सारंग

जेंवत श्याम नन्दकी कनियां। टेक

कछुक खात कछु गिरावत छबि निरखत नंद रनियां।

बरी बरा बेसन बहु भांतिन ब्यंजन बहु अनगनियां।

आपु न खात नंद मुख नावत सो सुख कहत न बनियां।
जो रस नंद यशोदा बिलसत सो नहिं तिहूं भुवनियां।
भोजन करि अचमन कीन्हों बलदेव मांगत जुठनियां।

देवगंधार

काहे न मंगल गावे यशोदा मैया।
कोटि कोटि ब्रह्मांडके भर्ता, जप तप ध्यान न आवे॥
न जानूं यह कौन पुण्य है, यशुमति गोद खिलावे।
सुन्दर कमल दल लोचन, श्याम धेनुके संग आवे।
मात यशोदा करत आरती, बलदेव दर्शन पावे॥

खम्माच

वह रसना जो हरिगुण गावै। टेक
नैननकी छबि यहै चातुरता.
ज्यों मकरन्द मुकुंदहि ध्यावै।
निर्मल चित्त तौ सोई सांचो,
कृष्ण बिना जिय औरन भावै।

कानन‍की जु यहै अधिकाई,
सुनि हरि गुण सुधारस प्यावै ।
करतेई जो श्यामहिं सेवै,
चरनन चलि वृन्दावन जावै ।
बलदेवके प्रभू दरसन दीजै,
ऐसी हरि सौ प्रीत बढ़ावै ।

काफी

खेलो खेलो हो स्याम रङ्ग होरी हो ! टेक
ताक लगाये खड़ी सखियंन संग.
ओट लिये राधाप्यारी हो !
देखो देखो स्याम वह कोउ आवति,
अबीर लिये भरि थारी हो !
इक पिचकारी और प्रभू मारो,
भींज जाय तन सारी हो !
दास बलदेव निरखि यह लीला,
हरि-चरनन बलिहारी हो !

सारंग

जियकी बतियाँ जिय हीं रही री।

बहुरि गोपाल देखि नहिं पाये, ढूंढ़त कुंज अही री।
एक दिन प्रात समीप यहि मारग, वेचन जाति दही री
प्रीतके कारन दान मिस मोहन, मेरी बांह गही री।
बिन देखे घड़ि जात कलप सम, विरहा अनल बही री।
बलदेव बिन दरसन प्रभु तोरें, नैनन नींद लही री।

बरुआ

अरी मुरली मन हर लियो मोर॥ टेर

मुकुट मनोहर मधुर चन्द्रिका, नागर नन्दकिशोर।
मधुर मधुर सुर वेनु बजावत, मोहन चितको चोर।
सुनत टेर शिथिल भई काया, जिया ललचत ओही ओर
अद्भुत नाद करत बन्सीमें, मोहन चन्द्र चकोर।
बलदेव भजु बालकृष्ण छवि, अरज करूं कर जोर।

राग आसावरी

येई मनोरथ दया कर पाऊं ।

बन्सीबट कालिन्दी तट, नट नागर नित्य निहारूं ।
मुरली तान मनोहर सुनि सुनि, तन सुधि बिसारूं ।
निरखि झलक अंग अंगनि, पुलकित तन मन वारूं ।
रिझाऊं स्याम मनाइ गाइ गुन, गुंज माल गर डारूं ।
दास बलदेव भूलि जग सारौ, श्यामहि श्याम पुकारूं ।

सोरठ

मुरली मधुर बजाई श्याम ॥ टेक

मन हरि लियो भवन नहिं भावै, व्याकुल वृजकी बाम ।
भोजन भूषनकी सुधि नाहीं, तनुक नहीं बिश्राम ।
करत सिंगार बिवस भइं सखियां अंगिया गईं भुलाई ।
श्यामसुन्दर बन वेनु बजावत, चित हित्त रास रचाई ।
बिबस भईं सब सखियां, बलदेव रहे संकुचाई ।

आसावरी

बारी बारी जाऊं ए यशोदा तुमरे लाल पै।

आवत जात डगरिया रोके रोके,

बिनती करि हारी वाकी चाल पै।

यमुना तट पर बैन बजावे बैठे,

बैठे कदमवाकी डाल पै।

कुंज गलिनमें रास रचावै-रचावै,

सखिया नचावै सुर-ताल पै।

मोर मुकुट पीताम्बर सोहै-सोहै,

जाउं बलिहारी बनमाल पै।

बलदेव दरशनको उपासी-उपासी,

भयो है बेहाल गोपाल पै।

विलावल

बाल छवी गोपालकी सब काहू प्यारी।

ले लै गोद खिलावहीं, यसुमति महतारी।

पीत झंगुलि तन सोहहीं, सिर कुलहि विराजै ।
छुद्र घण्टिका कटि बनी, पाय नूपुर बाजै ।
मुरि मुरि नाचैं मोर ज्यों, सुर नर मुनि मोहै ।
बलदेवके प्रभू नन्दके अंगनामें सोहै ।

ठुमरी छाया

श्याम रसभरी वैन बजाई, तनकी सुध बिसराई रे । टेक
सुनकर वन्शीकी धुन प्यारी,
चकित भई सब बृजकी नारी ।
उठ बृन्दाबन धाई रे ॥ श्याम०
पक्षी मौन हुए बिरछनमें,
घास तजा गैयन बनमें ।
यमुना नीर रुकाई रे ॥ श्याम०
सुर बिमान चढ़ नभमें आये,
वन्शी धुन सुन मन हरषाये ।
पुष्प वृष्टि बरसाई रे ॥ श्याम०

दर्शन दीजे कुंजविहारीं, बलदेव शरण आये तुम्हारी।
सन्तनके सुखदाई रे ॥ श्याम०

ठुमरी खम्माच

तेरी सूरत पर वारी जाऊं दर्शन दे गिरधारी रे। टेक
यमुना तट हरि धेनु चरावे,
मधुर मधुर स्वर बैन बजावे।
कांधे कमरियां कारी रे ॥ तेरी०
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे,
देख रूप मुनिगण मन मोहे।
कुण्डलकी छबि न्यारी रे ॥ तेरी०
वृन्दावनमें रास रचावे, गोप गोपिका संग मिलि गावे।
नूपुरकी धुन प्यारी रे ॥ तेरी०
भक्त हेत हरि रूप बनाये, बलदेवके प्रभु मन भाये।
चरण कमल बलिहारी रे ॥ तेरी०

भैरव

अब जागो मोहन प्यारे । टेक

सांवरी सूरत मोरे मन भावे, सुन्दर श्याम हमारे ।
प्रात होत चिड़ियाँ चोंचानी, कागाके झनकारे ।
ग्वाल वाल सब द्वारे ठाढ़े, टेरत नन्द दुलारे ।
सखियाँ सारी मगमें ठाढ़ी, श्याम संग हमारे ।
सुन्दर छवि श्यामको प्यारो, निरखे वलदेव तुम्हारे ।

भीम पलासी

चल देख अली कुंजनकी गली,
वो छली मुरलीको बजावत है ।
रस रङ्ग रंगीली तुकीली उमंगसे,
तान पै तान लगावत है ॥
हंस हंसके करे हमको वसमें,
चसके ठसके दिखलावत हैं ।

छलिया छल छन्द छबीलो छली,
छैला छिप छांछ चुरावत है ॥
छतियां छुइ रार मचावत है,
दधिकी मटकी ढरकावत है ।
बलदेवको श्याम बड़ो छलिया,
दधि खाइके नाच दिखावत है ॥

भीम पलासो

गोपाल हमारे बाल सखा,तुम और नहीं हम और नहीं ।
तुम भीतर हो हम बाहिर हैं,तुम परदेमें हम जाहिर हैं ।
तुम मात पिता हम बालक हैं । तुम०
तुम ज्योति हो मैं ज्वाला हूं, तुम दीपक मैं उजियाला हूं ।
तुम दाता हो मैं भिखारी हूं । तुम०
तुम हित हो मैं हितकारो हूं,तुम ठाकुर हो मैं पुजारी हूं ।
तुम घोर घटा मैं मोरा हूं । तुम०
तुम चंदा हो मैं चकोरा हूं, तुम कमल खिले मैं भौंरा हूं ।

तुम श्यामल मैं बलदेवल हूं। तुम०

तुम हरि हो मैं हरियाली हूं, तुम फूल गुलाब मैं लाली हूं।

तुम बाग बने मैं माली हूं। तुम०

भैरवी

दिखाय मेरे प्यारे सूरत तुम्हारी दिखाय।

विप्र सुदामाके दुःख सब टारे, ऐसे ही मोंको उबार।

उबार मेरे प्यारे०

जल डूबत गजको तुम हीं बचायो, बांकी सुनो है पुकार।

पुकार मेरे प्यारे०।

नरसीको हुण्डी वांके बिहारी, तुमने हीं दोनो सकार।

सकार मेरे प्यारे०।

चीर बढ़ायो तुम द्रोपदीको, हारे हैं कौरव हजार।

हजार मेरे प्यारे०।

बलदेवको तुम दिलसे लगालो, आई है बारी हमार।

हमार मेरे प्यारे०।

पीलू

बगुला भक्तन सौं डरिये री। टेक

इक पग ठाढ़े ध्यान धरत हैं,
दीन मीन लौं किम बचिये री।

ऊपर तें श्यामल रङ्ग दिखत हैं,
हिये कपट छलिया लखिये री।

इनतें दूरहि रहे भलाई,
निकट गये दृगन फँसिये री।

श्याम बिहारी यह मायावी पूरे,
भूलि न संग बसिये री।

दूरि तें इनके दर्शन कीजे,
बलदेव कृष्ण कृष्ण रटिये री।

सारंग

जो सुख होत गोपालहिं गाये ! टेक

सो नहिं होत किये जप तपके, कोटिक तीरथ न्हाये !

दिये लेत नहिं चार पदारथ, चरन-कमल चित लाये !
तीनि लोक तृनसम करि लेखत. नन्दनंदन उर आये।
वंशीवट वृन्दावन यमुनातट. तजि वैकुण्ठ कौन जाये !
बलदेव हरि सुमिरन करि, बहुरि न भव चलि आये।

गजल

श्रीकृष्णसे लौ लगाता रहेगा।
तो सब काम वोही बनाता रहेगा। टेक
कपट त्याग जो उसको भजेगा।
तेरे पाप स्वामी मिटाता रहेगा। श्री कृ०
जो पापोंको मनसे हटाता रहेगा।
तो आवागवन तेरा जाता रहेगा। श्री कृ०
मगन तू उसीके भजनसे रहेगा।
तौ हृदेमें दर्शन दिखाता रहेगा। श्री कृ०
भजनसे हरीको रिझाता रहेगा।
बलदेव आनन्द पाता रहेगा। श्री कृ०

लगन श्यामसे तू लगाता रहेगा।

तो बनवारी हिरदे समाता रहेगा। श्रीकृ०

खम्माच

आज श्याम मोहे लीनी बांसुरी बजाय के।

बांसुरी बजाय श्याम मुरली सुनाय के॥

हर हर सब करत जात, गागर सिर धरत जात।

नीर नारि भरन चली, सुध ना रही शरीर की॥

फिर फिर देखत जात, मोहनको हेरत जात।

बलदेव आवत देखि प्रेम वश हैं बिहारी की॥

कहरवा

नाचै नन्दलाल नचावे वांकी मैया। टेक

रूनक झनक पग नूपुरं बाजै,

ठुमक ठुमक पग धरेरी कन्हैया।

दाख चिरौंजी कछु नहिं भावे,

माखनके श्याम अधिक खवैया।

खेल न जाने खिलौना न जाने,
बंशीके श्याम अधिक बजैया।
साल न ओढ़े दुशाला न ओढ़े,
काली कमरियाको बड़ो रे उढ़ैया।
बलदेवके प्रभु श्याम विहारी,
यशुमति लेत श्यामकी बलैया।

बंगला ठुमरी

कैसे आंऊरे सांवरिया तेरी नगरी। टेक
इत मथुरा उत गोकुल नगरी।
बीच बहे यमुना गहरी॥
पाली चलूं तो पायल भीजे।
कूद पड़ूं तो भीजूं सगरी॥
केसर कीच मच्यो आंगन में।
सखी रपट गई राधा पगरी॥
भर पिचकारी मुखपर डारी।
भीज गई साड़ी सगरी॥

बल्देवके प्रभु युगल छवि।
बसौ मेरी हृदय नगरी ॥

सोरठा

राधे—ऐसा मान न कीजे वार वार। टेक
ए बड़ भागन सदा सुहागन जाऊं तोपै वार वार।
उतसे श्याम पठावत तो ढिंग तू उतको दे टार टार।
मैं चौगानकी गेंद बनी हूं मेरे तौ पग नहिं चार चार।
तुम कुछ प्रीति की रीति न जानो समुझावत गई हार हार।
बल्देव अब कैस निभैगी तू पात पात वह डार डार।

असावरी

सखी री मुझे आज मिले नन्दलाल।
मोर मुकुट मकरा कृत कुण्डल गल बैजन्ती माल।
पीत बसन घन श्याम मनोहर घूंघर वाले बाल।
कमल नयन सांवरि सूरत कीनी मुझे बेहाल।
देख देख छवि मोहनकी तनक न तनकी संभाल।
श्याम सुन्दरकी चितवन देखि बल्देव भये निहाल।

धनाश्री

अंखियां हरि दरसनकी प्यासी ! री अंखिया०

देखो चाहत मन मोहनको, निशि दिन रहति उदासी !

केसर तिलक मुंतीयन गल माला, यह गोकुलके वासी !

नेह लगाये त्यागी गये वृजमें डारि गये गल फांसी !

हमारे मनकी वह जानतु हैं री लोगनके मन हांसी !

वल्देवके प्रभु तुम्हारे दरस विना हम जाय वसों काशी !

राग सोहनी

एरी यशोदा माई,

तेरो ललना मोसे करत लडाई, जाने न देवे कन्हाई। टेक

यमुनाको जात मोकूं रोकत टोकत

बैयां पकड मोरि नरम कलाई।

अंगियां मरोर डारी सारी सब फार डारी,

गरवाको हार तोड धरनी बगाई।

गगरी ढुरक गई चुरियां करक गई,

सखियन देख देख करत बडाई।

मानत न एक बिनती करत अनेक,

बलदेव गोपालके चरणन बलिजाई।

हमीर

श्याम चुपकै आवत माखन खात। टेक

ठाढ़ो चकित चहूं दिशि मन्द मन्द मुसुकात।

मथनी मंह कोमल कर डारे, भाजनकी ठहरात।

जो पावत सो लेत ढोठ हठि, नेकहु नांहि डरात।

देखत दूरि ग्वालिन ठाढ़ी, मन धरिवेकी घात।

बलदेव ये माधुरी लीला. देखि देखि हरखात।

पहाड़ी

हरि दर्शनकी प्यासी रे अखियाँ.। टेक

हार सिंगार छोड़ कर सारे, जगसे भई उदासी रे।

गोकुल ढूंढ़ी मथूरा ढूंढ़ी, ढूंढ़ फिरी ब्रज सारी रे।

योग जतन किये बहुतेरे, मिले नहीं बनवारी रे।
यमुना तट कदमकी छायाँ, आय मिले गिरधारी रे।
बलदेवके प्रभू दर्शन दीजो, अर्ज करूं कर जोरी रे।

श्याम कल्यान

धन्य धन्य वे हैं ब्रजकी नारी। टेक
जिन्हके आंगन नाचत नित प्रति,
मोहन करतल दे दै तारी।
परम प्रिय मन मोहन जूकी,
ठाढ़ो निरख रही छवि न्यारी।
जिन्हके हाथ खात माखन दधि,
लाड़ लड़ावत दै दै गारी।
मुरली धुनि सुनि भागति सगरी,
लोक लाज ग्रह काज बिसारी।
चाहत चरन धूलि नित तिन्हकी,
बलदेव प्रभुके दरस भिखारी।

वड़वा पीलू

बाजै बाजै श्याम तेरी पैञ्जनियां। टेक

पैजनी बाजै अधर विराजै, तों मोह लई नर मुनियां।
यशुमति चलना सिखावें,उँगली पकड़ लईं दो जनियां।
जामातो जरकसका सोहै, टोपी लालके बैजनियां।
हाथोंमें कंगना पैर पैजनियां, बुलाकमें सोहै लटकनियां।
बलदेवके गोपाल बिहारी, तीन लोकके तुम धनियां।

विलावल

संवलिया मनको लुभावै रे। टेक

जब देखूं तब यमुना किनारे रे हाँ,
वो बसुरिया ठाढ़ो बजावै रे।
जब देखूं तब सखा संगमें रे हाँ,
वो नन्दकी धेनु चरावै रे।
जब देखूं तब सखियाँ सङ्गमें रे हाँ,
वो हँस हँस रास रचावै रे।

जब देखूं तब घट ही के पटमें रे हाँ,
वो अपनो दरश दिखावै रे।
जब देखूं तब बलदेवके संगमें रे हाँ,
वो कृपाकर प्रेम बढ़ावै रे।

झंझोटी ठुमरी

मिला दो सखी श्याम सुन्दर मोहे आज। टेक
रात दिवस मोहे चैन न आवे भूल गये सब काज।
खान पान मोहे कछु नहिं भावे बिन देखे घनश्याम।
जोगन बनकर बन बन ढूंढूं छोड़ जगत को लाज।
बलदेव विना हरिके दर्शन बिरथा साज समाज।

विलावल

सिखावत चलन यशोदा मैया। टेक
अरबराइ कर पानि गहावत डगमगाइ धरनी धरे पैयां।
कबहुं सुन्दर बदन बिलोकी उर आनंद भरि लेत बलैया।
कबहुं बलको टेरि बुलावति इहि आंगन खेलो दोउ भैया।

कवहुक कुल देव मनावति चिरजीवौ मेरे बल कन्हैया।
बलदेवके प्रभु सुखसागर अति प्रताप दोउ बालक नंदरैया।

जैजैवंती

श्याम कर मुरली अतिहि शोभित । टेक
परसत अधर सुधारस,
प्रगटत मधुर मधुर सुर बाजत।
लटकत मुकुट भौंह छवि,
मटकत नैन सैन अति छाजत।
ग्रीव नवाय अटकि वन्शीपर,
कोटि मदन छवि लाजत।
लोल कपोल झलक कुण्डलकी,
यह उपमा कछु लागत।
मानहु मदन सुधारस क्रीड़त,
आपु आपु अनुरागत।
वृन्दावन विहरत नन्द नन्दन,
ग्वाल सखन संग सोहत।

बलदेव प्रभुकी छवि निरखत,
सुरनर मुनि मन मोहत।

खम्माच

मोहन बसि गयो मेरे मनमें। टेक
जित देखों तित वोहि दीखै, घर बाहर आंगनमें।
अंग अंग प्रति रोम रोममें, छाइ रह्यो तन मनमें।
मोर मुकुट पीताम्वर वांके, कुण्डल झलके काननमें।
कंकन कलित और वनमाला, नूपुर धुनि चरणनमें।
चपल नयन भृकुटी वर वांकी, ठाढ़ो सघन लतनमें।
बलदेव बिन मोल विको हौं, यांकी नेक हंसनमें

रामकली

श्याम मोंय हंस इंसके बतरावे री। टेक
कहा करूं कहां कूं जाऊं कासो पुकार करों री।
कौन सुने मेरे मनकी जीया अति घबरावे री।
रूप देख मन ललचावे जगत सों डरत हों री।
लोक लाज कान जगत की जाँसों पछतावत हों री।

या छवि श्यामकी सुनो री मुनियनके ध्यान न आवे री ।
धन बलदेव भाग उनको श्याम सुन्दर दर्श दिखावेरी ।

प्रभाती

न्यारी करो श्याम अपनी गैया । टेक

नाहिन बनत लाल हम तुमसों, काह भयो दस गैयां ।
ना तुम हेरो ना तुम फेरो तुम लागे श्याम खेल खिलैयां ।
ना रे किसीके हम नौकर चाकर न किसीके ग्वाल गुसैयां
आपन रहत नींदको मातो, हमहिं चरावत वन वन गैयां ।
कबहुं जाय कदम चढ़ि बैठे, हम गैयन संग लगत पठैयां ।
मानी हार बलदेवके प्रभु, अब नहिं जाऊं नंदकी दुहैयां ।

वागेश्वरी

हौं एक नई बात सुनि आई । टेक

महरि यशोदा ढोटा जायो घर घर बटत बधाई ।
द्वारे भीर गोप गोपियनकी महिमा बरणि न जाई ।
नन्द महर हरषत डोले मात यशोदा लेत बलाई ।

अति आनन्द होत गोकुलमें रतन भूमि निधि छाई।
नाचत तरुण वृद्ध अरु बालक गोरस कोच मचाई।
बलदेवके प्रभु झूले पलना सुन्दर श्याम कन्हाई।

गौरी

टेरि कान्ह गोबर्धन चढ़ि गइया। टेक

मथि मथि पियो वारि चारिकमें,
भूख न जाति अघाति न घैया॥
शैल शिखर चढ़ि चितै चकित,
अति हित बचन कह्यो बलभैया॥
बांधि लकुट पट फेरि बोलाई,
सुनि कल वेनु धेनु धुकि धैया॥
बलदाऊ देखियत दूरि ते,
आवति छाक पठाई मेरी मैया॥
किलकि सखा सब नाचत मोर ज्यों,
कूदत कपि कुरंग को नैया॥

खेलत खात परस्पर डहकत,

छीनत कहत करत रोग दैया ॥

बलदेव नित ये छबि सुख निरखत,

बरसत सुमन सहित सुरसैया ॥

जैजैवंती

अबकी वेर हमारी, लाज राखो गिरधारी । टेक

जैसी लाज रखी पारथकी, भारत युद्ध मंझारी ।

सारथि होके रथको हांको, चक्र सुदर्शन धारो ॥

भक्तकी टेक न टारी ॥ अबकी०

जैसी लाज रखी द्रौपदी की, होन न दीन्ही उघारी ।

खैंचत खैंचत दोउ भुज थाके, दुःशासन पचिहारी ॥

चीर बढ़ायो मुरारी ॥ अबकी०

कर जोड़े बलदेव खड़ा है, अब हूं शरण तुम्हारी ।

कृष्ण कृष्ण रटत सांझ सवेरे, श्रीबृषभानु दुलारो ॥

तकि आयो शरण तुम्हारो ॥ अबकी०

इमन

मोपै कैसी यह मोहिनी डारी ,

चित चोर छैल गिरधारी ॥ टेक

ग्रहकारजमें जी न लगत है, खानपान लगै खारी।
निपट उदास रहत हौं जबते सूरत देखि तिहारी।
संगकी सखी देति मोहिं धीरज,वचन कहत हितकारी।
एक न लगत कही काहूंकी, कहति कहति सब हारी।
रही न लाज सकुच कुल जनकी,तन-मन सुरति बिसारी।
बलदेव मोहिं समुझि बावरी, हंसत सकल नर-नारी।

आसावरी

झूलत युगल किशोर आज हिंडोला।

सांवरी सूरत मेरे मनमें बस गई जैसे चन्द्र चकोर।
चन्द्र बदन बृषभान नन्दनी केसर रंग सुडोल।
दादर मोर पपीहा बोलत पन्छी कर रहे सोर।
शीतल पवन चलत पुरवैया गरज रह्यो घनघोर।

मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल सिर चन्दनकी खोर।
दास बलदेव प्रभुको प्यारो सुमिरत नन्दकिशोर।

दादरा

श्याम झुलै हिंडोरा कुञ्जन वनमें ॥ टेर

संग झूलै वृषभान नन्दनी,
शोभा देख हरषे मनमें।

कोयल कीर पपैया बोले,
दामिनि दमक रही घनमें।

सुन्दर गान करे सब वनिता,
विरहा अग्नि जग्यो तनमें।

कौस्तुभ मणियां कण्ठ बिराजे,
गुञ्ज माल पहरे गलमें।

कोटि काम या छवि पर वारी,
मुरति बसी मेरे नयननमें।

बलदेवके प्रभु कुंजविहारी,
जिया लाग रह्यो तेरे चरणनमें।

भैरवी

बनहिं बन श्याम चरावत गैया।
सुभग अंग सुखमाको सागर, कर बिच लकुट धरैया।
पीत बसन दमकत दामिनि सम, मुरली अधर बजैया।
धावत इत उत दाऊके संग, खेल करत लरिकैयाँ।
गैयनके पाछे नित भाजत, नन्दरायको छैया।
धन्य-धन्य वे बृजकी धूमरि, धौरी कारी गैया।
जनहिं पियावत जल जमुना तट, ठाढ़ो आपु कन्हैया।
दास बलदेव शरण तुम्हारी, हो तुम दाऊजीके भैया।

भैरव

अब जागो गिरधारी मोहन, अब जागो गिरधारी। टेक
बछड़ा बछड़ी दीठन लागे गैयां आईं सारी।
नन्द दुलारो दुहन वालो, दुहावन आईं व्रजनारी।
कई सखी चौंकी ले आईं, जल भर लाईं झारी।
कोई अंगोछा दातुन ल्याई, दरपण ल्याई राधा प्यारी।

ग्वाल बाल सब द्वारे ठाढ़े, सखियाँ लेर तुमारी।
बलदेव कहै धन धनरो यशोदा,चरन कमल चितवारी।

छाया

मुकुटकी लटक अटकी मनमाहीं।

नृत्यत नटवर मदन मनोहर,
कुण्डल झलक पलक बिथुराई।
नाक बुलाक हलत मुक्ताहल,
होठ मटक गति भौंह चलाई।
ठुमक ठुमक पग धरत धरनिपर,
बांह उठाय करत चतुराई।
झुनक झुनक नूपुर झनकारत,
तातार्थेई थेई रीझ रिझाई।
बलदेव समजो श्याम हिय अन्दर,
भवन करौ जित रहौ सदाई।

सिंदुरा

मुकुटकी चटक, लटक छवि कुण्डलकी,

भौंहकी मटक नेकु अँखियन देखाउ रे।

एजी वनवारी, बलिहारी जाऊँ तेरी,

मेरी गैल किन आय नेकु गायन चराउ रे।

नन्दके किशोर चित-चोर मोर पंख वारे,

बांसुरी बजाय तन-तपन बुझाउ रे।

वल्देवके प्रभू सुजान रूप गुनके निधान,

बंसीवारे सांवरे पियारे इत आउ रे।

धानी

आज बंशी बाजी है यमुना तीर। टेर

कैसो करूं मोरा मन धरे न धीर, जिया धरे न धीर।

एक समय बाजी वृन्दावनमें, व्याकुल भयो शरीर।

सकल वृजकी वाम विकल भईं तन उघड़त चीर।

जल थल जीव सकल मन मोहे, वंशीवटके तीर।

अचरज भईं सब ब्रजकी सखियां, चले ना यमुनानीर।
कहे बलदेव सुनो श्याम प्यारे, नेक बंधाओ धीर।

थियेटर

दर्शन भिक्षा मांगे नयना, चल मन गोकुल ग्राम।
श्यामको बता दे नगरिया रे। टेक
दुनियां जीवनका सपना, इन बिन कोऊ ना अपना।
नित मन जपना राधेश्याम, प्रेमकी यही डगरिया रे।
बहियाँ न पकड़ो मोरि नरम कलइयाँ।
कर पकरत श्याम मोरि चुड़ियाँ चटकाई रे।
अरज गरज मोरि मानत नाहीं।
श्याम तेरी देखें बलदेव चतुराई रे।

थियेटर

श्याम सुन्दरकूं हेरत डोलूं कोउ मिला दे नजरियां रे।
मोर मुकुट सिर साजे, कानन कुन्डल शोभे।
सोहे उर बन माल, निरखत वा लोचन लोभे। कोउ०

कटि किंकिणि कमनीय, हृदय कौस्तुभ राजे।
सुन्दर श्याम सलोना, बांसुरी अधर बिराजे। कोउ०
दूध दही माखन चख जावे, तापे दिखावे जोर।
कोई माखन चोर बतावे,बलदेव कहे ये चित चोर।को०

मालकोस

श्रीनन्द घर बाजत आज बधाई।
धन ये मथुरा धन ये गोकुल धन्य यशोदा माई।
धन्य धन्य बृजके बासी सब निरखत कंवर कन्हाई।
नन्दराय घर नौबत बाजे मोतियन चौक पुराई।
धन्य सखियां गान करत सब देव सुमन बरसाई।
सुबरण कलस धरे हैं भरके बंदरवार बंधाई।
ये गोपाल बलदेवके स्वामी प्रगटे गोकुल जाई।

कोसिया

चलो री सखी दर्शन करि आवें,बनसे मोहन आवत हैं।
ग्वाल बाल सब साथ लिये गाय चराकर आवत हैं।

कर दर्शन चित हो प्रसन्न सुन्दर रूप लुभावत हैं।
शिव सनकादिक ध्यान लगावें अन्त कोई नहिं पावत हैं।
वृन्दावनमें रास रचावत सुन्दर बैन वजावत हैं।
जो शरणागत होय श्यामकी भवसागर तर जावत हैं।
दास बलदेव कहे करजोरी हरि चरणन चित लावत हैं।

भैरवी दादरा

नन्दलाल दही मोर खाय गयो री। टेक
कुछ खायो कछु तो ढरकायो,
ग्वालन हाथ लुटाय गयो री।
लाख कही मेरी एक न मानी,
मन चाही वात बनाय गयो री।
तोड़ फोड़ सब दईं मटकियां,
जोरी कर धमकाय गयो री।
जाय कहूंगी यशोदाके आगे,
तेरो लाल इतराय गयो री।

सांवरि सूरत माधुरो मूरत,
मोरे मन मांय समाय गयो री।
वलदेव भजे गोपाल छवि,
आवागमन मिटाय गयो री।

गजल

दिलदार श्याम प्यारे, गलियोंमें मेरे आजा।
आखें तरस रही हैं, सूरत इन्हें दिखाजा॥
चेरी हूं तेरी प्यारे, इतना तू मत सता रे।
लाखों हीं दुख सहे हैं, अब तो रहम तू खाजा॥
तेरे ही हेत मोहन, छानी है खाक बन बन।
दुख झेले सर पर अनगिन, अब तो गले लगाजा।
मनको रहूं मैं मारे, कबतक बता दे प्यारे।
सूखे विरहके तारे, पानी इन्हें पिलाजा॥
सूरत श्याम प्यारी, मैं दास हूं तिहारा।
वलदेवको अरज है, आकर तू फन्द छुटाजा॥

खेमटा

बन्शीवालेका गम दिलसे जाता नहीं।

कैसे करूं वो आता नहीं। टेक

न प्राण जाये न कृष्ण आये,

सखियनको वो सूरत दिखाता नहीं। बं०

न नींद आवे न घर सुहावे,

मुझे सखियोंका बोल भी भाता नहीं। बं०

जन्म जन्म लौं संग रही हौं,

मुनि नारद भी झूठा बताता नहीं। बं०

श्यामकी पाती है ऊधोके करमें,

मुझे पातीका ब्योरा सुनाता नहीं। बं०

बिहारीको संगमें क्यों नहीं लाये,

न जाने क्या कहा वो बताता नहीं। बं०

बलदेवको बिन बनवारी देखे,

कुछ भी दिलमें सुहाता नहीं। बं०

रेखता

दिल लेके चले जाओगे कैसे जीवेंगी हम।
तेरी काली काली जुल्फ हैं, सांवला सा है बदन।
जब तेरी याद आवेगी, रो रो मरेंगी हम।
हम कहती श्याम तुमसे, परदेश ना गमन।
हा हा करेंगी तेरी, पैयाँ पड़ेंगी हम।
यह छवि तिहारे रूपकी, बसी मेरे बदन।
बलदेवके प्रभु कृपा कीजे, यश गावें हर दम।

विलावल

मैं नहिं माखन खायो री माता।
मैं नहिं माखन खायोरी। टेक
भोर भयो जब गौअनके पीछे,मधुबन मोहिं पठायोरी।
चार पहर बंशो बट भटक्यो, सांझ पड़ी घर आयोरी।
मैं बालक पायनको छोटो, छींको किस विधि पायोरी।
ग्वाल बाल संग बैर भयो है, बरबस मुख लपटायोरी।

तेरे मन कछु भेद होत है, जानि परायो जायोरी।
यह ले तेरी लकुट कमलिया, तू मोहिं नाच नचायोरी।
इतनी सुनकर हंसी यशोदा, लेकर कण्ठ लगायोरी।
बलदेवके प्रभु श्यामविहारी, लीला बहु बिधि गायोरी।

देश

अब कहां जायगो रे, लीन्हों हाथ पकड़के। टेक
निर्भय दधि खानेको बैठो, आगे मटकी धरके।
मोय देख भोरा बन बैठो, खायले नियत भरके।
अब मोंय पाय गयो रे॥ ली०
नरम कलइयां हरिकी पकड़ी, पकड़ी बांह सम्हलके।
तब तो कृष्ण छुड़ावन लागे, ऐंठ मैंठ बल करके।
दाव तले आय गयो रे॥ ली०
सास ननद मोंय बुरी बतावे, नाम चोरटी धरके।
यह बहू छिनगारो आई, ताना दे हंस हंसके।
सारो दधि खाय गयो रे॥ ली०

मात यशोदा यों उठ बोलीं, गयो कान्हा घर लड़के ।
वलदेवके ठाकुर श्यामविहारी, मोर मुकुट सिर धरके ।
दर्शन होय गयो रे ।। ली०

मुल्तानी

इतनी जाय कहो री हमारी, ब्रजराज कुंवरसों प्यारी ।
फिर पाछे इतनी कहि दीजो,सुध लीन्हीं न एकहूं बारी ।
फागुन आयो झांझ डफ बाजे, भोर भई बृज अतिभारी।
मोहिं आस तिहारे मिलनकी, भूल गई सुध सारी ।
मोहिं गुलाल लाल बिन तोरे, भई रैन अंधियारी ।
अंसुवन कौ अब रङ्ग बनो है, नैन बने पिचकारी ।
वृन्दावनकी कुञ्ज गलिनमें, ढूंढ़ ढूंढ़ कर हारी ।
देहो दरस मोहि अपनी कृपासे, वलदेवको आसतिहारी

कानरा

ग्वालन तू बार बार क्यों आवे री । टेक
क्या मेरे कान्हसे हेतु लगायो क्यों ना हमें बतावे री ।

दूध दही छींके धरि आवे जामनके मिस आवे री।
दीपक बाल धर्‍यो मन्दिरमें अंधेरेके मिस आवे री।
फूलनकी सेज फूलनके तकिये झाड़नके मिस आवे री।
बछड़ा खोल दिये खड़कनमें बांधनके मिस आवे री।
मोतियनकी लड़ तोड़ बखेरो बीननके मिस आवे री।
मोतियां बीने श्याम निहारै घड़ी का पहर लगावे री।
बलदेवको वृन्दावन जीवन हरसे हेतु लगावे री।

श्याम कल्याण

हमारी तोरी नांय बने गिरधारी। टेक

तुम तो नन्दजीके छैल छबीले, मैं वृषभान दुलारी।
हम जल यमुना भरन जात रहो, मगमें मिले बनवारी।
यमुना जल नहाबेको पैठी, हिल मिल सब वृजनारी।
लेकर चीर कदम चढ़ि बैठे, हम जल मांहिं उघारी।
चीर हमारो देवो रे मोहन, सास सुने देगी गारी।
तुमारो चीर जभी हम देंगे, जलसे हो जाओ न्यारी।

जलसे न्यारी किस विधि होवें, तुम पुरुष हम नारी ।
कम्पे गात लाज मोंय आवे, मुसुकावे श्यामबिहारी ।
सबसे पहले राधिका निकसी, कृष्ण बजावे तारी ।
बलदेव भजो बाल कृष्ण छवि, तुम जीते हम हारी ।

खम्माच

ऐरी सखी तेरे भवनमें लगत चोर । टेक
सांझ चोर लगे सबेरे लगे और बड़ी भोर ।
दही खाय माखन खाय डारे मटकी फोर ।
ग्वालिनको दधि लूटे ऐसा जब्बर जोर ।
एक भइया सांवर कहिये, एक भइया गोर ।
नन्दजीके ढोटा कहिये, नाम है किशोर ।
टेढ़ी वेढ़ी बातें बोले, बैयाँ मरोरे झकझोर ।
जल यमुनामें फांद पड़े, हो गये सराबोर ।
बलदेवको दर्शन देवें, वृन्दाबनकी गोर ।

कहरवा

बिहारीको अपने बस करि पाऊं ।

राखूं लगाय हृदयसे अपने, जियकी तपन बुझाऊं ।
ठाढ़ो रहूं सन्मुख कर जोड़, जियत न पीठ दिखाऊं ।
लाग रहें दृग पलक न झपके, बार बार बलि जाऊं ।
जहां जहाँ चरण धरें प्रभु मेरे, तहां तहां नैन बिछाऊं ।
भूख लगे जब श्यामसुन्दरको, छप्पन भोग बनाऊं ।
झारी ले पनिहारी बनकर, यमुना नीर भरि लाऊं ।
आवे नींद जब श्यामसुन्दरको, फूलन सेज बिछाऊं ।
लागे न दूंगी ताप बैरिया, सांसकी बेनियां डुलाऊं ।
बलदेव की प्रीति बढ़े चरणनमें, यह मांगे बर पाऊं ।
लीला अगम अपार श्यामकी, कौन कौन गुण गाऊं ।

भैरवी

यशोदा तेरे आंगनमें हमारे चित चोर । टेक
श्यामसुन्दरको आवत देखे वृन्दावनकी ओर ।

बिजली चमके बादल गरजे चढ़ी घटा घन घोर।
कुंजन बनमें दादुर बोले कोयलिया करे शोर।
रास रचावे मनको लुभावे नाचत जैसे मोर।
यमुना तट कदम तरु ठाढ़े बन्शी बजावे जोर।
मग रोकके बैठो नन्द महरिया कैसे पाऊं चोर।
सखियाँ सारी हेरत डोलें दास बलदेवकी पोर।
ग्वाल बाल सग लिये डोलें करत श्याम किलोल।

ठुमरी खम्माच

वांके बिहारी गगरिया भरनदे रे छैला।

चंचल गोरी मद भरे नैना, चितवन मारे कटरिया।
बृन्दावनकी कुञ्ज गलिनमें, आइ मथुराकी गुजरिया।
गगरिया धरन दे सांवलिया, काहे मारत है नजरिया।
सिरपर धरी गागर मेरे, लचक रही कमरिया।
डगर चलत मोरि बांह मरोरी, फोड़त है गगरिया।

वलदेव ये अनोखी चितवन, लड़ने दे रे नजरिया।
आधी रातको रास रचावे, सुनावे रे वो वंसुरिया।

पीलू

हरि मुख निरखत नैन भुलाने।

ए मधुकर रुचि पंकज लोभी ताहीते न उड़ाने।
कुण्डल मकर कपोलनके ढिग जनु रवि रैन विहाने।
भ्रव सुन्दर नैननि गनि निरखत खंजन मीन लजाने।
अरुन अधरध्वज कोटि बजू द्युति शशिगणरूप समाने
कुंचित अलक शिलीमुख मानहु लै मकरन्द निदाने।
तिलक ललाट कंठ मुक्तावलि भूषणमय मनि साने।
बलदेवके प्रभु नटवर गिरधारी, तोरे गुण जात न जाने

रामकली

सुनोरी यशोदा तेरे ललनाको वात। टेक
वन उपवन सरिता सव मोहे देखत श्यामल गात।
मारग चलत अनीति करत हरि हठिकै माखन खात।

पीताम्बर लै गिरते ओढ़त अंचल दै मुसुकात ।
जब हरि आवत तेरे ढिग सकुचि तनक है जात ।
कौन कौन गुन गाऊं श्यामके नेक न काहु डरात ।
तेरी सौं कहा कहौं यशोदा उरहन देत हूं लजात ।
सखियां निरखत श्याम सुन्दरको बलदेव हरिगुन गात ।

काफी

होरी खेलत हैं आज बनवारी ।

मुरली चंग बजत डफ न्यारो संग युवती बृजनारी ।
चन्दन केसर छिड़कत मोहन अपने हाथ बिहारी ।
भरि भरि मूठ गुलाल श्याम चहुं देत सबन पै डारी ।
छैल छबीले नवल किशोर संग श्यामा प्राण पियारी ।
गावत चार धमार राग तहं दै दै करतल तारी ।
फागजु खेलत रसिक सांवरो बाढ्यो रस बृज भारी ।
बलदेवके प्रभु कुंज बिहारी, भइ मगन सखियां सारी ।

दादरा

श्याम तेरी बांसुरी नेक बजाऊं।

जो तुम तान कहो मुरलीमें, हौं सोइ गाय सुनाऊं।
हमरे भूषन तुम सब पहिनो, हौं तुमरे सब पाऊं।
हमरी बिन्दी तुमहीं लगावो, हौं सिर मुकुट धराऊं।
तुम दधि बेचन जाहु वृन्दावन, हौं मग रोकन जाऊं।
तुमरे सिर माखनकी मटकिया, हौं मिली आय लुटाऊं।
माननी होकर मान करो तुम, हौं गहि चरन मनाऊं।
बलदेवके प्रभु तुम जो राधिका, हौं नन्दलाल कहाऊं।

नाटक

सांवरी सुरत मन मोहिनी मूरत छबि छाये नन्दलाला।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे गले वैजन्ती माला॥
मुखपर मुरली अधर बिराजै कानन कुण्डल आला।
बन्शी बट कदमकी छैयां झूल रहे नन्दलाला॥
वृन्दावनमें गौवें चरावे मुरली बजाने वाला।

कुंज गलिनमें बन्शी बजावे माखन चुराने वाला ॥
यमुना तट पै रास रचावे संग लिये वृजवाला ।
बलदेव छबि आजकी धरी है नाथ निराला ॥

गौरी

जो तुम सुनहु यशोदा गोरी । टेक
नन्द नन्दन मेरे मन्दिरमें आजु करन गयो चोरी ।
हौं भई आनि अचानक ठाढ़ी कह्यो भवनमें कोरी ।
रहे छुपाई सकुचि भवनमें भई श्यामको मति भोरी ।
जब गहि बांह कुलाहल कीनो तब लहि चरन निहारी ।
लगे लेन नैनन भरि आंसू तब मैं कानि न तोरी ।
मोहिं भयो माखनको बिसमय रीतो देखि कमोरी ।
बलदेवके श्याम करत दिनहीं दिन ऐसी माखन चोरी ।

बिलावल

यशोदा तेरो लालना करत अचक्करी । टेक
यमुना भरन जल हम गईं तहां रोकत डगरी ।

सिर ते नीर ढराइ देत फोरि सब गागरी।
गैंडुरी दई फटकारिकै टूट गई मेरी टंगरी।
नित प्रति ऐसेई करे ढंग हमते कहै लंगरी।
अब बस बास नहीं बनत तुमरी ब्रज नगरी।
आपु गयो चढ़ि कदम ही चितवत रही सगरी।
ऐसे ही बलदेव सदा करे हमसों रहै झगरी।

काफी

खेलत श्याम श्यामा दोउ होरी।

अबीर गुलाल लालि मलि दीनों मुख वृषभान किशोरी।
जिमि शशि तारागन युत राजत, इन्द्रवधू लपटोरी।
नवो छबि जात कहोरी। खे०
नख सिख सब सरबोरी रंगन सों,केसरि मृगमद रोरी।
शोभित चीर नीलाम्बर अम्बर, भीगो तन लपटोरी।
लाखन रति लाज लजोरी। खे०
दास बलदेव निरखत ये छबिको,सुख लूटत हरिसोंरी।

पाटन अचल रहो त्रिभुवन पति, तेज पुंज सुख सोंरी।
यमुना सुरसरि जबलोंरी। खे०

गजल

श्याम तूं टेढ़ो तेरि टेढ़ि रे नजरियां । टेक
गोकुल तेरी टेढ़ी, वृन्दावन तेरो टेढ़ो।
टेढ़ी रे तेरी मथुरा नगरियां।
मुकुट तेरो टेढ़ो, लकुट तेरी टेढ़ी।
टेढ़ी रे तेरी मुखको मुरलियां।
ग्वाल तेरे टेढ़ो, गोपियां तेरी टेढ़ी।
टेढ़ी रे तेरी यशुदा डुकरियां।
चाल तेरी टेढ़ो, डोलत तूं टेढ़ो,
टेढा रे तेरी मुखकी बतियां।
यमुना बहे टेढ़ी, कदम तेरो टेढ़ो।
टेढ़ी रे तेरी कदमकी छइयाँ।
ध्यान तेरो टेढ़ो, भक्ति तेरी टेढ़ो।
टेढ़ो रे बलदेव परत तेरे पइयाँ।

गौरी

क्यों ठाढ़ी नन्द पोरि, ग्वालिन क्यों ठाढ़ी नन्द पोरी।
बेर बेर इत उत क्यों डोलै, बिजिया खाय हुई बौरी।
नन्द नन्दनसे कौन काम है, हमसे क्यों न कहोरी।
सुन्दर श्याम सलोनो सो ढोठो, उन दधि लेन कहोरी।
हमसे कहो तुम नेक ठाढो रहो, आप ही बैठ रहोरी।
नौ लख धेनु नन्द घर दूजे, तेरो ही लेन कहोरी।
ठाड़ी ग्वालिन मदकी मातो, तूं मेरो श्याम ठगोरी।
इतनी सुनके निकल आये मोहन, दधिको मोल कहोरी।
बलदेवके स्वामी रूप लुभानो, ये दधि भलो री बिकोरी

वसंत

आज बिहारी रास रच्यो है, मैं भी देखन जाऊं। टेक
हार श्रृङ्गार करो सब सखियां, मोतियन मांग भराऊं।
ओढ़ पीताम्बर पचरंग सारी, मोहनी रूप बनाऊं।
ललिता सखी ताल बजावे, मैं सुरबीन बजाऊं।

उत्तम निरत करूं हरि आगे, सारंग राग सुनाऊं ।
ग्वाल होय गिरधारी आवे, मैं ग्वालिन बन जाऊं ।
मोहन दान महीको माँगे, कंशको जोर दिखाऊं ।
इतनो रास रचूं मेरी सजनी, प्रेम मगन हो जाऊं ।
भजो बलदेव गोपाल छबि, जोतमें जोत मिलाऊं ।

काफी

बावरी वन आई तूझे होरी कौन खिलाई । टेक
वेस झरे दल बादल उलटे, मुख बिजली चमकाई ।
नैननमें चकचौंध करत है, घूंघटकी चतुराई ।
चंचल चपल अलमस्त ज्यूं, घूमत घूमत आई ।
हार श्रृङ्गारकी सुध बिसराई, किन लाल बहकाई ।
सास कहे सुनो री भवरिया, चुड़ियां कहां मुरकाई ।
मैं जो गई गौएं दुहावन, बछड़ा ने ओझड़बाई ।
चोवा चन्दन और अरगजा, अबीर गुलाल उड़ाई ।
बलदेव ये ठाडे रंग भीने, मानत नांय कन्हाई ।

छायानट

मोहन भये तुम नये खिलारी। टेक
बेर बेर समुझाय कहत हूं, मान कह्यो गिरधारी।
अबकी बेर रंग डार दियो है, अब डारे दूंगी गारी॥
मोरी बहियां मरोरी॥ मोहन०
एक पिचकारी मुखपर डारी, भीज गई तन सारो।
बलदेव ये छबि कंह लग बरनूं चरण कमलबलिहारी॥
प्रभू मैं शरण तिहारी॥ मोहन०

आसावरी

ठाढ़े हैं नन्दकिशोर, सखी री। टेक
यमुना तट पर श्याम खड़े हैं, बन्शी बजावत जोर।
मत जा गुजरियां नीर भरनको, डारे गगरियां फोर।
बिजली चमके बादल गरजे, घटा लगी घनघोर।
छींके परसे उतारी मटकियां, लियो है माखन चोर।
मटकियाँ फोरी बहियां मरोरो, बतियां न मानी मोर।
पन्नाके प्रभु श्यामबिहारी, मोहन चितके चोर।

रेखता

श्रीकृष्णके मुकुटकी झांकी नजर पड़ी है । टेक
यमुनाके उस किनारे दर्शन दिया है प्यारे ।
हम पार कैसे आवें जमुना अधिक बढ़ी हैं ॥
तुम आ मिलो मुरारी मेटो बिथा हमारी ।
तुमने अनेक बारी भक्तोंकी सहाय करी है ॥
तुम नन्दजीके लाला मतवाला श्याम प्यारे ।
सखियोंके मन हरनको मुरली अधर धरी है ॥
रचो रास बिहारी ठाढो बृज सखियां सारी
शरदकी रैन चन्द्रकी उजारी बलदेवको प्यारी है ॥

कामोद

श्याम मोरे ढिगते कबहुं न जावै ।
कहां कहूं सखि गैलन छाड़ै, जित जाऊं तित धावै ।
गैया दुहत गोद मेरी आ बैठे, दूध धार पी जावै ।
दही मथत नवनी लेवेकौं, मटकी मांहि समावै ।

रोटी करत आइ चौकामें, ऊधम अमित मचावै।
जेंवत वेर संग आइ बैठे, माल माल गटकावै।
सखियन संग वतरात आइ, सो पंचराज बनि जावै।
मुरली मधुर बजाय देखु सखि, मोहन हमहिं रिझावै।
सोवत समै सेज आ पौढ़े, प्रेम सखा बनि जावै।
स्वलप निंदरिया बीच, सपन महं माधुरिरूप दिखावै।
तदपिन बरजत थनै ताहिं सखि, चित अतिहो सुख पावै।
बलदेवजू नोहारि चन्द्रमुख अन्तर अति हुलसावै।

दादरा

सुनरी यशोदा रानी तेरे ललनाने मोय लूटी। टेक
मैं दधि बेचन जात बृन्दावन सिरपर गोरसकी मटकी।
आन अचानक तेरे कान्हाने पकड़ मेरी बैयां झटकी।
मैं ब्याकुल हो गई रही ना मोय सुध घूंघट पटकी।
ऐसो भई सुधि ना रही गिरी मैं धरन मेरी मटकी फूटी।
एक कहै मैं चूको दूसरी कहै सुनो यशोदा रानी।

आज या वृजमें तेरे कान्हाने ऐसी बदी ठानी।
घाट बाट पर रोकत डोलै नहिं भरन देवे पानी।
पनियां भरनमें दान मांगत है वो है ऐसो नादानी।
करकी चूड़ियां गईं चटक मोरी मोहनमाला भी टूटी।
बलदेवके प्रभु श्याम विहारी बात ये सगरे फूटी।

कौवाली

दर्शन देना हो नन्दलाल वृजराज कहाने वाले।
तुम मात देवकी जाये यशुमतिके पुत्र कहाये।
मथुरासे गोकुल आयेजो माखनके चुरानेवाले॥
आई प्रथम पूतना नार बातो सज्ज सोला श्रृङ्गार।
कीन्हें कृष्ण चन्द्रका प्यार खुल गये स्वर्गके ताले॥
लड़कन संग माटी खाई सुन मात यशोदा धाई।
तुम अपने मुख मांहींजी सब विश्व दिखाने वाले॥
जेते असुर कंसके आये तुमने सब सुरधाम पठाये।
सुन कंस राय घबराये जी पड़ गये कृष्णके पाले॥

सुरपति गर्वें अपरम्पार बरसन लागे मूसल धार।
बृज बासिन करी पुकार गिरधर हमको आज बचाले॥
प्रभु तुम किया गेंदका ख्याल वातो यमुनामें देई डार।
जा पहुंचे ततकाल वहांजो काली नाग नाथ निकाले॥
यमुना तट वन्शो वजाई सब सखियां मिल कर आई।
बृन्दाबनमें रास रचायो मिलकर नाच नचाने वाले॥
बिनती सुनियो कृष्ण मुरार नैया पड़ी मेरी मंझधार।
वलदेव कहे करि जोर प्रभू तुमहीं हो पार लगानेवाले॥

झंझोटी

तेरी बन जायगी गोविन्द गुण गायेते। टेर

ध्रुवकी बनी प्रहलादकी बन गई,
बलहूकी बन गई बावनाके आयेते।
गजकी सुनी ग्राहकी वन गई,
मझधार हरी चक्रके चलायेते।
सुदामाकी बन गई तन्दुलके लायेते,

द्रोपदीकी वन गई चीरके बढायेते ।
पूतनाकी वन गई जहरके लगायेते ।
गोपियनकी वन गई रासके रचायेते ।
विदुरानीकी वन गई छिल्के खवायेते,
गनिकाकी वन गई सूआके पढायेते ।
भिलनीकी वन गई जूठे वेर खायेते,
वलदेवकी वन गई कृष्ण गुण गायेते ।

पीलू कहरवा

बृन्दावन कुञ्ज धाम बिचरत श्याम बिहारी ।
कार्तिककी शरद रैनि चन्द्रकी उजारी ।
चलत पवन मन्द मन्द फूली फुलवारी ॥
विकसे सर कमल फूल शोभा अति भारी ।
झरना चहुं ओर झरत यमुना सुखकारी ॥
आनन्दकी रैनि जानि मुरली मुखधारी ।
लै लै नाम टेरि श्याम सकल बृजनारी ॥

सुनिके ध्वनि भवन त्यागि धाइ सखियां प्यारी।
उलटे तन चीर पहिरि आईं मिल सारी ॥
वीणा मृदंग चंग बाजै श्याम देत करतारी।
बलदेव इन चरनन प्यारे सुन्दर बलिहारी।

हमीर

श्यामने ये मुरली कैसी बजाई। टेक

सुनत टेर सुधि विसारि, सब गोप बालिका धाई।
लहंगा ओढ़ि ओढ़ना पहिरे, अद्भुद साज सजाई।
धेनु सकल तृन चरन बिसारो, ठाढ़ी श्रवण लगाई।
बछड़नके थन रहे मुखन मंह, सो पय पान भुलाई।
पशु पक्षी जंह तंह रहे ठाढ़े, मानो चित्र लिखाई।
पेड़ पहाड़ सब प्रेम बस डोलें, जड़ चेतनता आई।
यमुना प्रवाह नहिं चाल्यो, जलचर सुधि बिसराई।
धन्य बांसकी बनी मुरलियां, बड़ो पुन्य करि आई।
बलदेव ये दुर्लभ जिनि राखत, मुख श्याम लगाई।

जैजैवन्ती

मोर मुकुट बन्शीवालेने मन मेरा हर लीना।
सखियां तौ मन्दिरसे निकसीं, ओढ़े चादर झीना।
रत्न जड़ितकी एंड़ो बनो है यमुना मारग लीना।
मैं यमुना जल भरन जात रही बीच मिला रंग भीना।
मोंहि देख मुसुकात सांवरो चितवनमें कुछ कीना।
विकल भई सुध विसर गई घड़ा धरन धर दीना।
लोक लाज कुल कान तजी तन मन अर्पण कीना।
सुन्दर बदन कमल दल लोचन चितवन किया टोना।
वलदेव भये दरस दिवाने जन्म सुफल कर लीना।
श्री गोपाल लाल प्रभुके कारण प्रेम पदारथ लीना।

मलार

हे नारद मोहिं ब्रज बिसरत नांहीं।
वा क्रीड़ा खेलत यमुना तट, बिमल कदमकी छांहीं।
वे सुरभी वे बच्छ दोहनो, खरिक दुहावन जाहीं।

ग्वाल बाल करत कोलाहल, नाचत गहि गहि बांहीं।
गोप बधूकी भुजा कण्ठ धरि, बिहरत कुंजन मांहीं।
अमित विनोद कहां लौं बरनौं,मों मुख बरनि न जाहीं।
सकल सखा अरु नन्द यशोदा, वे चिततें न टराहीं।
जबहिं सुरति आवत वा सुखकी,जिय उमगत तनु नांहीं।
अनगन भांति करी बहु लीला, वा यशुदा नन्द निवाहीं।
सुत हित जानि नन्द प्रति पाले,बिछुरत विपति सहाहीं।
यदपि सुख-निधान द्वारावति, तोउ मन कहुं न रहाहीं।
बलदेवके प्रभु कुंजबिहारी, सुमिरि सुमिरि पछिताहीं।

भीम पलासी

बन्शीका डंका बजा दिया उस कालो कमलीवालेने। टेक
मोहनको कमली काली है, राधेकी चूनड़ आली है।
सब रंगोंका रंग लजा दिया, इस काली कमली वालेनें।
नयनोंकी पुतली काली है, मुखड़े पर जुल्फ निराली है।
सब रंगोंमें रंग मिला दिया, इस काली कमलीवालेनें।

यह वंशी नागन काली है, मोहन मुखड़े पर पाली है।
गोपियनका मन लुभा दिया, इस काली कमलीवालेनें।
हम जल भरने जब आवत हैं, पनघटपर रार मचावत है।
गोपियन पर रंग जमा लिया इस काली कमलीवालेन।
हम दधि वेचनको जावत हैं, आकरके दान चुकावत है।
गोपियनका माखन लुटा दिया, इस काली कमलीवालेनें।
जाको सनकादिक ध्यावत हैं, वेद विमल यश गावत हैं।
बलदेवका बन्धन छुड़ा दिया, इस काली कमलीवालेनें।

लावनी

छैल छवीले चपल लोचन, रसिक मोहन चटकीले। टेक
रतन जड़ित सिर मुकुट लटक रही, श्याम लट घुंघरारी।
बाल विहारी कन्हैयालाल, श्याम चतुर तेरी बलिहारी।
लोलक मोती कान कपोलन, झलक रही शोभा न्यारी।
जोत रज्यारो हमें हर बार दरश दो कृपा गिरधारी।
मन्द हंसन मृदु बचन अमोलक रच रही मुख लाली।

फूल गुलाब चिबुक सुन्दर रुचिर कंठ छबि बनमाली।
कर सरोजसे बूंद मंहदी उमङ्ग बहु रङ्ग प्रतिपाली।
झगुली पट कछनी श्यामल गात सुहात भले।
चाल निराली चरन कोमल पङ्कजके पात भले।
पग नूपुर झनकार परम उत्तम यशुमतिके तात भले।
संग सखनके निकट यमुना बछुरा चरावत जात भले।
देत छटा सी श्याम घटा मुख देखि शरद शशि सर मीले
बृज युवतिनके प्रेम देख भये माखन गटकीले।
गावे राग बिहार चरित हरि शरद रैनिमैं रास करे।
हरि चरित्र श्रवण सुन सुनके जिया अभिलाष करे।
हाथ जोड़कर करे बिनती बल्देव अब दरशन करे।

मारवाड़ी

आजा रे सांवरिया थारा दर्शन करसूं। टेक
दर्शन करसूं परसन होसूं चरनोदक लेसूं।
फूलनकी माला बनासूं सुन्दर श्याम सजासूं।

माखन ल्यासूं मिश्री ल्यासूं प्रभुके भोग लगासूं।
अगर कपूरकी आरती करसूं श्याम जूं वारी जासूं।
निरत करूंगी श्यामके आगे मोहनकूं रिझासूं।
स्याम विहारीका दर्शन कर बल्देव कहे सुख पासूं।

सांवरिया

ओजी नन्दलाल थारी दासी बन जाऊं जी।
दासी बन जाऊं थारे चरनन रम जाऊं जी। ओजी०
कहो तो सांवरिया थारी मुरली बन जाऊं जी।
मुरली बन जाऊं मैं तो राग छतीसूं गाऊंगी। ओजी
कहो तो सांवरिया मोहन माला बन जाऊं जी।
माला बन जाऊं थारे हिवड़े रम जाऊंगी। ओजी०
कहो तो सांवरिया थारा पीताम्बर बन जाऊं जी।
पीताम्बर बन जाऊं थारे अंग रम जाऊंगी। ओजी०
कहो तो सांवरिया थारी चौंटी बन जाऊं जी।
चौंटी बन जाऊं जामें हीरा लाल जड़ाऊंगी। ओजी०

कहो तो सांवरिया थारा कुण्डल बन जाऊं जी।
कुण्डल बन जाऊं थारे कानांमें लग जाऊंगी। ओजी०
कहो तो सांवरिया थारी मालन बन जाऊँ जी।
मालन बन जाऊँ मैं तो फुलड़ां सेज बिछाऊँगी। ओजी
कहो तो सांवरिया थारी कामल बन जाऊँ जी।
कामल बन जाऊँ थारी गाय चराकर लाऊँगी। ओजी
कहो तो सांवरिया थारा बिछिया बन जाऊं जी।
बिछिया बन जाऊँ मैं तो गैरा नाच नचाऊँगी। ओजी०
कहे बलदेव अब थारी राधेजी बन जाऊँ जी।
राधेजी बन जाऊँ मैं और जनम नहिं पाऊ गी। ओजी

मोहनी

श्याम म्हाने कीया क्योंनी बृजका मोर। टेर
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, बिच करता किलोल।
मात यशोदा चुगो चुगाती, भर भर कनक कटोर।
बलदेवके प्रभु दर्शन दीजो, म्हे अर्ज करां कर जोर।

घूमनी

बोली थारी लागे म्हानें मीठी। साँवरिया॥
सकड़ी गलीमें मनमोहन मिलिया,
कैसे फिरूँगीं मैं पूठो।
थे तो साँवरिया सिरका जो साःहब,
म्हैं थारे हाथांरी अंगूठी।
सास बुरी मेरी नणद हठीली,
जल बल होय अँगीठी।
बलदेवको प्रभु श्यामविहारी,
सूरत लागै थारी मीठी।

सोरठा

श्याम म्हाने कुञ्जन में ले चालो।
यमुना तीर कदमको छयियां श्याम हिंडोरो घाल्यो।
राधा ललिता दोनूं झूले देवें पगरो झालो। श्याम०
रिम झिम रिमझिम मेहो बरसे आंगन हो रह्यो आलो

मैं तो थारे गोद्यां चढ़सूं पग मैं पड़ गयो छालो। श्याम
धड़क धड़क मेरो जिवड़ो धड़क मोहन कण्ठ लगाल्यो।
बलदेव भजे गोपाल बिहारी मोहन लागे प्यारो। श्याम

दुवादेसी

एजी म्हारा कृष्णचन्द्र मुरारी थारे चरणकमल बलिहारी
बृजभूमि में जन्म लियो थे प्रथम पूतना मारी।
इन्द्रराजको गर्व मिटायो नखपर गिरवर धारो॥ ऐजी
खेलत गेंद गिरा दई जमुना चढ़े कदमकी डारी।
पैठ पताल कालीनाग नाथ्यो फन फन नृत्य मुरारी॥ ए
कुञ्जन बनमें रास रचायो शोभा अचरज भारी।
बीच बीच गोपी श्याम विराजे ज्यों चन्दा उजियारी॥
महाबली कंसादिक मारे भक्तन भयो सुखारी।
उग्रसेनको राजतिलक दे पुरी बसाई न्यारी॥ एजी०
बलदेव तुमरो गुण गावे मुझको आस तुम्हारी।
करो कृपा बृजनन्द सांवरा राखो लाज हमारी॥

दुवा देसी

एजी म्हारा साँवरिया गिरिधारी रखियो लाज हमारी
गजकी टेर सुनत हीं धायो, त्याग गरुड़ असवारी।
चक्रसुदर्शन चल्यो मगरपर, गजकी जान उबारी ॥
कीन्हों कपट भूप दुर्योधन, द्रौपदीको करत उघारी।
कृष्ण-कृष्ण कर टेरन लागी, चीर बढ़ाय दियो भारी।
विप्र सुदामा सखा सुघड़ आयो, बालकपनकी यारी।
दिया दरिद्र खोय बना दई सुवरण महल अटारी। ए०
द्वारकामें नृग राजा होये दानी बोर बल कारी।
अन्ध कूपसे बाहर कर दियो ये भक्त वनवारी ॥ एजी
सदा सहाय सन्तनकी कीनी क्यों मोहिं आज बिसारो
भज बलदेव गोपाल छबि चरण कमल वलिहारी ॥ ए०

दुवादेसी

जोहूं वाट विहारी, कबकी ठाढी सेवा कुंजमें।
कबकी ठाड़ी सेवा कुंजमें जोहूं तिहारी बाट।
कोल बचन म्हासे कर गया जमनाजोके घाट ॥ जोहूं०

मोर मुकुट थारे सोहनो गल बैजन्ती माल।
मुखपर मुरली सोहनी थारा सून्दर नयन विशाल ॥जो
वृन्दावनकी कुंज गलिनमें रच्यो रास विलास।
एक गोपी न्यारी नचे एक मोहनके पास ॥ जोहूं
वल्देव तुम्हारो यश गावे धरे तुम्हारो ध्यान।
सेवा कुंजमें आयके म्हाने दर्शन दो भगवान ॥ जोहूं०

गजल

श्याम म्हाने शरणागत दीजो जो। श्याम०
शरणागत रहसां सेवा करसाँ, नितउठ दर्शन पास्यांजी
बिन्द्रावनको कुंजगलिनमें, गोविन्दका गुन गास्यांजी।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, गले बैजन्ती माला जी।
वृन्दावनमें गऊ चरावैं, मोहन मुरली वालो जी।
फूलनको झूला बनासाँ, झांकीकी छबि न्यारी जी।
सांवरियेकी सेवा करसां, पहर पीताम्बर सारी जी।
बलदेवकुं प्रभु दरसन दीजो. यमुनाजीके तीरां जी।

दुवादेसी

मैं दासी तेरी, राखो पत मेरी वृज नन्द साँवरा । टेक

प्रथम जो सुमरूं शारदा शक्ति तीन लोक मन मानी ।
हंसा रूढ़ सुमति मोंय दीजो प्रगट ज्योति भवानीजी ।
देवो बुध चोफेरी । राखो०

कौरव राज सुयोग पांडवां बाने सभा रचाई ।
थलमें जल दरसायो यह उनकी चतुराई ॥
कौतुक माया फेरी । राखो०

भरम्यो फिरे भूप दुर्योधन पृथ्वी नज़र न आई ।
हंस्यो भीम बोल्यो कटुबानी खटक कलेजे छाईजी ॥
मांनो अगनींकूं चेती । राखो०

जुवे कपट कस्यो दुर्योधन छिनमें जाल रचायो ।
भूल गया ओसान पांडव देख कपटकी मायाजी ॥
स्याल सिंहनने घेस्यो । राखो०

गव्यों जाय आज दुःशासन दुष्ट उतारे चीर ।

करो सहाय यदुराय नाथ तुम बलदाऊके बीरजी ॥
भरी सभामें टेरी ॥ राखो०

जन्म लियो वसुधाके कारण युग द्वापरके अन्त ।
राचे रंग संग गोपियनके नन्दके कुँवर अनन्तजी ॥
अब द्रोपदोकी बेरी । राखो०

वृजको छोड़ द्वारिका धाये मोंय भूल गये भगवन्त ।
सुनी पुकार द्रोपदीकी पलमें चीर बढ़ायोजी ॥
या बलदेवकी बेरी । राखो०

दुवादेसी

श्याम तेरी बनिता बन जाऊं । टेक

निरत करूंगी श्यामके आगे वृज बाम कुहांऊं ।
सखियां सारी श्यामकी प्यारी मैं मिल रास रचाऊं ।
बनवारी तुम्हारे सिंगारकूं फूलनको हार बनाऊं ।
चम्पा चमेली फूल गुलाब श्याम सुन्दर सजाऊं ।
थार परस माखनको बिहारीके भोग लगाऊं ।

कञ्चन थार कपूरकी वाती आरती लेकर आऊं ।
बलदेवजू गोपाल लालके प्यारे नित्य थारा गुण गाऊं ।

दुवादेसी

नन्दजीके लाला ठाडी ब्रजबाला दर्शन दीजिये । टेक
बृजबाला विनती करे, सुनिए श्याम पुकार ।
विन दर्शन फीको लगे, सबही हार सृङ्गार ॥
सुन्दर श्याम मनोहर मूरत, शोभा अधिक अपार ।
क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल, गल पुष्पनको हार ॥
शिव सनकादिक गन्धर्व ध्यावे कर रहे वेद पुकार ।
शेष सहस्र मुख रटत रात दिन, कोई न पावे पार ॥
नाम अनन्त अन्त नहीं आवे, हो सबके करतार ।
बलदेवके प्रभु कुञ्ज बिहारी, तुम्हारो ही आधार ॥

नट मलार

पावस ऋतु वृन्दावनकी दुति, दिन-दिन दूनी दरसै है ।
छबि सरसै है लूम झूम यो, सावन घन-घन बरसै है ।

हरिया तरवर सरवर भरिया, जमुना नीर कलोलै है ।
मन मोलै है, बागांमें, मोर सुहावणो बोलै है ।
आभा मांही बिजली चमकै, जलधर गहरो गाजै है ।
ऋतु राजै है श्यामकी, सुन्दर मुरली वाजै है ।
विहारीजी रो भीज्यो पीताम्बर, राधेरी चूनर मारी है ।
बलदेवके नाथ कुंज विहारी, झूल रहे पिय प्यारी हैं ॥

लावनी

सांवरा शरणागत तेरी, बृज आय इन्द्रने घेरी । टेक ।
देखो जी बादल चढ़ आये, दामिनि दमकत भलकाये ।
मेघपर लोका बरसावे, भाग अब कहो कहां कुं जावे ॥
दोहा—कहो जी अब कैसे बणे पड्यो इन्द्रसे बैर ।
कोप्यो है पृथ्वीको पालक किस बिध होगी खैर ॥
यतनमें मत लाओ देरी ॥ १ ॥ सां०
कही हम तुमरी सब मानी, झूठ सब इन्द्रकी जानी ।
लखी हम तुमरी नादानी, भेट गिरवरकी मन ठानी ॥

दोहा—गोकुल राजा नन्द जूं, जांघर कंवर कन्हाय।
मिथ्या बचन होत तिहारो, जनकी करो सहाय ॥
थुक्को हम बहुतेरी हेरी ॥ २ ॥ सां०
कहूं मैं थारा गुण भारो, पूतना बालकपन मारी।
दुष्टनीने माया विस्तारी, बनी एक सुन्दर सी नारी ॥
दोहा—कुचमें जहर लगायके, दियो कृष्ण मुख मांहि।
एक मासको रूप तिहारो, जीवत छोडी नांहि ॥
मारकर मारगमें गेरी ॥ ३ ॥ सां०
निरमल जल यमुना को कियो,तुरत ही दावानल पीयो।
खेंचकर मत सबको हरलीनो,अभय बृज बासिनको दीनों
दोहा—बृज तेरीको सांवरा इन्द्र करे बेहाल।
अब सहाय करो नंदलाला करुणा सिन्धु गोपाल ॥
सरणे या बृज मंडल तेरी ॥ ४ ॥ सां०
नन्द नन्दन अपने मुसकाये, बचन ये मुखते फरमाये।
कहो तुम यहां कैसे आये, भेंट गिरवरकी मन लाये ॥

दोहा—नख पै गिरवर धारिके, कियो कृष्णने खेल।
गोवर्धनके शीश पै, दियो सुदर्शन मेल॥
अधर धर बन्शीको टेरी॥ ५॥ सां०

सोहे सिर पंचरङ्गी चीरा, लगे मुख पाननको बीरा।
गले मोतियन माल हीरा, सोहे कटि पीताम्बर पीरा॥
दोहा—सात कोसके बीचमें, गोवर्धन विस्तार।
सात वर्षको रूप हरी को, लीनो गिरवर धार॥
असीसां दे रही बृज सारी॥ ६॥ सां०

इन्द्र तो कोप कोप वर्षे, नहीं जल पर्वत परसे।
दामिनिछिनछिनमें चिमके, धार मूसल सम धमके॥
दोहा—बरस बरस कर हारियो, अब जान्यो जगदीश।
दोनुं हाथ जोडकर, धर्यो धरनी बिच शीश॥
मेरी बुधि मायाने फेरी॥ ७॥ सां०

अब आयो शरणागत तेरी, श्याम थे क्षमा करो सब मेरी
बिनती मोर मुकुट धारी, अरज थे सुनियो गिरधारी॥

दोहा—अग्रवाल कुलदीपे सदा, पटनो है निवास ।
कर जोड़ बलदेव खडा, सुनो मेरी अरदास ॥
मिटाओ जनम और मरना ॥ ८ ॥ सां०

चेतावनी

सब दिन होत न एक समान । टेक
कबहुंक राजा हरिश्चन्द्र घर सम्पति मेरु समान ।
एक दिन जाय स्वपच घर डेरा अम्बर गहत मसान ।
कबहुंक सीता रामचन्द्र संग विचरत पुष्प विमान ।
एक दिन सीता रुदन करत बन महा सघन उद्यान ।
कबहूंक युधिष्ठिर राज सिंघासन अनुचर श्रीभगवान ।
एक दिन द्रोपदी नगन होत है चीर दुःशासन तान ।
कबहुंक जननी जनत अंक विधि लिखत लाभ अरु हानि ।
दास बलदेव कहां लग बरने विधिका अङ्क प्रमान ।

सूचना

सर्व सज्जनोंसे निवेदन है कि यदि इस पुस्तकमें कोइ प्रकारकी त्रुटि हो या किसी को कोइ प्रकारको आपत्ति हो तो उसे क्षमा करते हुए मुझे सूचित करने की कृपा करेंगे ताकि आगामी संस्करणमें शंसोधन कर दिया जा सके।

प्रकाशक

Jawahir Press, Calcutta.